Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) **ISSN:** 2582-2004
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre Volume 02, Issue 01

DOI: 10.46523/jarssc.02.01.12
Multidisciplinary, Open Access

वर्तमान समाज में सामाजिक मानदण्डों की प्रासंगिकता

डॉ0 अर्चना मिश्रा
असिस्टेंट प्रोफेसर (समाजशास्त्र विभाग) शिया पी0जी0 कालेज, लखनऊ

किसी भी सामाजिक व्यवस्था को क्रियाशीलता प्रदान करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण मानक या मानदण्ड होते हैं। ये समाज में धीरे–धीरे एवं व्यवस्था की आवश्यकता के अनुरूप निर्मित होते हैं। सामाजिक मानदण्ड समाज में विपथगामी व्यवहारें को नियंत्रित करते हैं तथा सामाजिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने में सहायता पहुँचाते हैं। यदि सामाजिक मानदण्ड की सारी मर्यादाएँ नष्ट हो जायं तो घोर अव्यवस्था फैल जायेगी। मनुष्य अपनी सामाजिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाये रखने के लिए और नई–नई परिस्थितियों और समस्याओं का हल खोजने के लिए समय–समय पर मानदण्डों की रचना करता रहता है। मैरिल ने कहा है कि मानव मानदण्डों का निर्णय करनेवाला प्राणी है। समाज में व्यक्तियों की प्रस्थिति के आधार पर सामाजिक मानदण्ड होते हैं। मनुष्य अपनी विभिन्न आवश्यताओं की पूर्ति हेतु संस्कृति द्वारा अनुमोदित जिन तरीकों को अपनाते हैं, उन्हें सामाजिक मानदण्ड कहा जाता है। समाज में मानदण्डों की संख्याअसंख्य है, मानदण्ड समाज का संगठन व्यवस्था व संचालन इस तरह से करते हैंजिससे कि समाज की निरंतरता बनी रहे एवं विभिन्न व्यक्ति अपने लक्ष्यों को विधिवत रूप से प्राप्त करने में सफल हो। मानदण्डों का नियंत्रण सचित अनुभव, विश्वास आस्था तर्क व अन्तःक्रिया के माध्यम से होता है। सामाजिक मानदण्ड किसी भी व्यवस्था की रीढ़ है बिना सामाजिक मानदण्डों के सामाजिक ढाँचा सीधा खड़ा नहीं रह सकता। समाज साहचर्य की चेतना पर आधारित होता है, साथ ही साथ समाज को ऐसे नियमों और व्यवस्थाओं को भी निर्मित करना होता है, जिससे व्यवस्था बनी रहे। प्रसिद्ध समाजशास़ी टालकॉट पारसन्स एवं आर0के0 मर्टन ने सामाजिक व्यवस्था को निर्मित करने वाले तत्वों में सांस्कृतिक तत्वों को अधिक महत्व प्रदान किया है। जिसमें सामाजिक मूल्य, आदर्श नियम, व्यवहार के मानदण्ड, तरीके इत्यादि को सम्मिलित किया जा सकता हैं इमाइल दुर्खीम तो व्यक्तित्व के निर्माण के लिए या यूँ कहें तो मानव के अस्तित्व के लिए समाज की प्रकार्यात्मक व्यवस्था को अपरिहार्य मानते हैं। दुर्खीम के अनुसार जब समाज में मानदण्ड के उल्लंघन की प्रक्रिया अधिक बढ़ जाती है तो समाज में अप्रतिमानता की स्थिति आ जाती है और समाज विघटित होने लगता है। समूह के द्वारा निर्मित व्यवहार ही सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने व संचालित करने के लिए जरूरी है। मनुष्य को एक जैविक प्राणी से एक सामाजिक प्राणी बनाने का कार्य इन्हीं

Received: 03.05.2019 **Accepted:** 25.05.2019 **Published**: 28.05.2019

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) **ISSN:** 2582-2004
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre Volume 02, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.02.01.12
Multidisciplinary, Open Access

व्यवहार के तरीकों (मानदण्डों) के द्वारा किया जाता है। मानदण्ड सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार के हो सकते हैं– दफ्तर में अधिकारी के आने पर कर्मचारी का खड़ा होना सकारात्मक मानदण्ड है जबकि परम्परागत हिन्दू पत्नी द्वारा प्रायः अपने पति का नाम न लेना निषेधात्मक मानदण्ड है। बीयरस्टीड के अनुसार जनरीतियों और रूढ़ियाँ अनौपचारिक मानदण्ड हैं जबकि कानून औपचारिक मानदण्ड का तरीका है। शिष्टाचार (भद्र आचरण) करणीय एवं अकरणीय व्यवहार, नैतिक एवं अनैतिक बातें परम्परागत एवं आधुनिक व्यवहार के मध्य सामंजस्य जैसी चीजें समाज में प्रचलित व्यवहार के मानदण्डों से ज्ञात होती हैं। डॉ0 आर0के0 मुखर्जी ने अपनी पुस्तक ''मूल्यों का समाजशास्त्र'' में मूल्य को सामाजिक नियामक सूत्र के रूप में परिभाषा किया है, मूल्य समाज के मार्गदर्शक हेाते हैं। जो सामाजिक व्यवस्था को स्थिरता प्रदान करते हैं। सामाजिक मानदण्ड एवं सामाजिक मूल्य यद्यपि एक नहीं है फिर भी दोनों में पर्याप्त समानता है और इस रूप में मानदण्डों के संदर्भ में अधिकार, विशेषाधिकार व उत्तरदायित्व की व्याख्या आवश्यक है। सामाजिक मानदण्ड के महत्वपूर्ण अंग के रूप मे सामाजिक मूल्यों के महत्व को समाज कभी नकार नहीं सकता।

समाज की महत्वपूर्ण विशेषता में निहित है उसकी निरन्तरता एवं परिवर्तनशीलता। सभी भौतिक–अभौतिक वस्तुएँ परिवर्तन के प्रवाह में हैं। उत्कर्ष–पतन, विकास–ह्रास की प्रक्रिया प्रकृति ही नहीं, बल्कि विभिन्न समाजों में भी दिखलाई पड़ती है। समय एवं स्थान सापेक्ष सामाजिक मानदण्डों में विभिन्नता एवं अन्तर पाया जाता है। यह हो सकता है कि कोई मानदण्ड किसी समाज में मान्य हो, वही मानदण्ड दूसरे समाज में मान्य नहीं भी हो सकता है। जैसे पश्चिमी समाज में शिष्टाचार के लिए हैलो, हाय, जैसे शब्द प्रयोग होते हैं जबकि भारत जैसे देश में अभिवादन का तरीका उनसे भिन्न हो सकता है। प्राचीन भारत में जो व्यवहार के मानदण्ड प्रचलित थे आधुनिक भारत में उनका संशोधित रूप समाज में दिखलाई पड़ता है।

समाज में परिवर्तन के साथ ही साथ सामाजिक मानदण्डों, मूल्य प्रतिमानों व्यवहार के तरीकों में भी बदलाव आया है। आज समाज में बढ़ रही विसंगतियों, भ्रष्टाचार अनैतिकता, अकरणीय व्यवहार, हिंसा बलात्कार, व्यभिचार, अमानवीय कृत्य को अंजाम देने वाले घटकों का अवलोकन एवं विश्लेषण करने पर पता चलता है कि यह सब सामाजिक व्यवस्था में नियन्त्रण की कड़ी के कमजोर होने का परिणामस्वरूप है या बदलते परिवेश के साथ सामाजिक मानदण्ड एवं सामाजिक व्यवहार में सामंजस्य (Adjustment) एवं समन्वय (Co-ordination) के अभाव के कारण हैं। दूसरी ओर नैतिक मूल्यों का निरन्तर पतन उपरोक्त

Received: 03.05.2019 **Accepted:** 25.05.2019 **Published**: 28.05.2019

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) **ISSN:** 2582-2004
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre Volume 02, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.02.01.12
Multidisciplinary, Open Access

कारणों के लिए उत्तरदायी है। सामाजिक मानदण्ड सामाजिक नियंत्रण के महत्वपूर्ण अभिकरण (Agency) हैं, जो सामाजिक व्यवहार को नियन्त्रित कर सामाजिक व्यवस्था को प्रकार्यात्मक स्वरूप प्रदान करते हैं। बीयरस्टीड ने सामाजिक मानदण्डों को सामाजिक व्यवहार के नापने के पैमाने के रूप में देखा है, जबकि डेविस ने सामाजिक मानदण्डों को सामाजिक नियंत्रण का महत्वपूर्ण साधन मानते हैं।

सामाजिक मानदण्डों को निर्मित करने वाली आचार–व्यवस्था को शैक्षिक अभिकरणों ने हाशिये पर ला दिया है। आज प्राथमिक विद्यालयों से लेकर उच्च एवं तकनीकी शिक्षण संस्थाओं में भी मानव को निर्देशित एवं नियंत्रित करनेवाली नैतिक शिक्षा का अभाव सा हो गया है। परिवार जैसे प्राथमिक समूहों में भी नियन्त्रण की कमी नजर आती है। ऐसे में हम आदर्श प्रकार्यात्मक सामाजिक व्यवस्था की कल्पना नहीं कर सकते। परिवार के सदस्यों में मतैक्य नहीं है, विद्यार्थी शिक्षक के अनुकूल नहीं है, चारों तरफ भ्रष्टाचार का बोल–बाला है। सन्दर्भ व्यक्ति की (Reference Personality) व्यक्ति की अवधारणा पूरी तरह परिवर्तित हो चुकी है। आज शिक्षा प्राप्ति का मतलब निहित स्वार्थों की पूर्ति तक सीमित हो गया है, जिसका सामाजिक व्यवहार से कोई सरोकार नहीं रह गया है। ऐसे में सामाजिक मानदण्डों के सम्मुख उनके अस्तित्व का संकट उत्पन्न हो गया है।

सामाजिक व्यवस्था की निर्मायक इकाईयों में परस्पर समन्वय बहुत आवश्यक है। समन्वय से ही कोई भी व्यवस्था अस्तित्व में बनी रहती है। यदि सामाजिक व्यवस्था की इकाईयों में तालमेल नहीं होगा तो सामाजिक व्यवस्था में विभिन्न तरह के दोष उत्पन्न हो जायेंगे। सामाजिक मानदण्ड सामाजिक व्यवस्था की प्रकार्यात्मक इकाईयों (अंगों) को निर्मित करते हैं और सामाजिक व्यवस्था के कुशल संचालन में अपना योगदान करते हैं। विभिन्न तरह की सामाजिक प्रस्थिति (Status) के निर्धारण में सामाजिक मानदण्डों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है एवं ये प्रस्थितियों के व्यवहार के प्रचलित तरीकों से अवगत कराते हैं। सामाजिक व्यवस्था के अस्तित्व में बने रहने के लिये जरूरी है कि सामाजिक मानदण्डों को बदलती प्रस्थितियों के क्रम में समझना होगा। प्रख्यात ब्रिटिश समाजशास्त्री हर्बर्ट स्पेन्सर ने अपनी पुस्तक "First Principles" में लिखा है कि ''संस्कृति वही अस्तित्व में रहती है, जो बदलती परिस्थितियों के अनुरूप अपने को अनुकूलित (Adjust) कर लेती है।'' इससे स्पष्ट है कि बदलते परिवेश के साथ व्यवहार के तरीकों में भी परिवर्तन जरूरी है, लेकिन परिवर्तन सामाजिक व्यवस्था के प्रकार्यात्मक पक्ष को ध्यान में रखकर ही होना चाहिए। समाज में प्रचलित सामूहिक व्यवहार का तरीका इस कार्य को अच्छी तरह से निभा सकता है। अतः आवश्यकता है कि सामाजिक मानदण्डों को परिवर्तित परिस्थतियों के क्रम में समझा जाये एवं उनका कुशल

Received: 03.05.2019 **Accepted:** 25.05.2019 **Published**: 28.05.2019

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) **ISSN:** 2582-2004
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre Volume 02, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.02.01.12
Multidisciplinary, Open Access

क्रियान्वयन जरूरी होगा। जिससे विभिन्न तरह की सामाजिक विसंगतियों, अन्तर्निहित टकराव, संघर्ष व अन्य विभिन्न समस्याओं का निराकरण संभव होगा।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सामाजिक मानदण्ड किसी भी सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं एवं व्यक्ति और समाज का मार्गदर्शन करते हैं। सामाजिक मानदण्डों का महत्व सामाजीकरण, सामाजिक व्यवहार, नियंत्रण के संदर्भ में विभिन्न रूपों से महत्वपूर्ण समझा गया है। समूह एवं व्यक्ति के दृष्टिकोण से मानदण्ड ही व्यवहार के प्रतिमानों को और साथ ही लक्ष्यों के निर्धारण और उनको प्राप्त करने के तरीकों से सम्बन्धित है। लक्ष्यों की पूर्ति के साधनों के चयन का आधार भी मानदण्ड ही हैं। किसी भी मानवीय समाज में मानदण्डों की प्रासंगिकता का प्रश्न उस समाज के प्रकार्यात्मक अस्तित्व क साथ जुड़ा होता है। मानव इतिहास में सामाजिक मानदण्ड समय एवं स्थान सापेक्ष समाज को सुचारू रूप में क्रियाशीलता प्रदान करते रहे हैं। कोई भी मानवीय समाज सामाजिक मानदण्डों के बिना सुचारू रूप में संचालित नहीं हो सकता। भारतीय संदर्भ में यह उक्ति अत्यन्त समीचीन प्रतीत होती है।

सन्दर्भ–सूची

1. Davis, Kingsley, Human Society, macmillan, New York, 1949 p. 52
2. Bierstedt : The Social order : Mc Graw Hill New York, 1957, p. 143
3. Maclver, R.M. & Page, C.H. : Society ; Reinhart, New York, 1937[p 19
4. Sumner, W.G. Folkways : Ginn. Boston; 1606, p. 134
5. Merton R.K. Social theory & Social Structure; Free Press, Giencoe, 1960 pp. 149-160.
6. सिंधी नरेन्द्र कुमार, वसुधाधर, गोस्वामी –समाजशास्त्र विवेचन 2002, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
7. मुखर्जी, आर0एन0 – सामाजिक नियन्त्रण एवं सामाजिक परिवर्तन, 2008, विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली।

Received: 03.05.2019 **Accepted:** 25.05.2019 **Published**: 28.05.2019

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.